शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 अप्रैल 2014

सांझी-संस्कृति का सवाल और अमृतलाल नागर का साहित्य

डॉ. संतोष कुमार भारद्वाज
हिन्दी विभाग
स्वामी श्रद्धानंद कॉलेज
अलीपुर, दिल्ली, भारत

शोध संक्षेप

भारत में सांझी संस्कृति के सवाल को हिंदू-मुस्लिम एकता से जोड़ कर देखा जाता है। यह सांझी-विरासत भारतीय परंपरा का अभिन्न हिस्सा रही है। इस देश में प्राचीन काल से ही विभिन्न धर्मों, संप्रदायों, जातियों के लोग जीवन के कार्य व्यवहार में भागीदार रहे हैं। यहां तक कि भारतीय संस्कृति ने विदेशी आक्रमणकारियों को भी अपने में समाहित कर लिया था। कालांतर में वे भारतीय कहलाए। इतिहास ऐसी कथाओं से भरा पड़ा है। इस देश में ऐसा पहली बार हुआ कि व्यापारिक वेश में आए अंग्रेजों ने आक्रमण कर धोखे से यहां कब्जा कर लिया। भारतीय सांस्कृतिक एकता उनके साम्राज्य स्थापना में बाधक बनने लगी तो उन्होंने इस एकता को तोड़ने के लिए 'फूट' डाल दी। जिसका राष्ट्रवादियों ने अपने स्तर पर प्रतिरोध किया वही साहित्यकारों ने साहित्य के माध्यम से पुनः सांस्कृतिक एकता स्थापित करने की कोशिश की। प्रेमचंद ने अपने साहित्य में सर्वप्रथम इस फूट और अलगाव का विरोध किया। उनके साहित्य में हिंदू मुसलमान समान कार्य व्यवहार में संलिप्त हैं। प्रेमचंद के बाद अगर कहीं बहुसंख्यक हिंदू-मुसलमान आमने-सामने दिखाई देते हैं, वह अमृतलाल नागर के साहित्य में। प्रस्तुत शोध पत्र में इस सन्दर्भ में अमृतलाल नगर के साहित्य का अवलोकन किया गया है।

प्रस्तावना

अमृतलाल नागर का समस्त साहित्य सांस्कृतिक एकता का प्रतीक है। एकता का यह भाव उन्हें अवध की संस्कृति से बीज रूप में प्राप्त हुआ था। इस संस्कृति में हिंदुओं और मुसलमानों में कुछ बातों को छोड़कर कोई विशेष अंतर नहीं था। नागर जी का बचपन और किशोरावस्था ऐसे ही वातावरण में व्यतीत हुआ था। स्वभावतः इस वातावरण ने नागर जी के मानस को गहरे तक प्रभावित किया। रामविलास शर्मा लिखते हैं कि उनके साहित्य में नवाबी लखनऊ और उसमें भी विशेष रूप से चौक की संस्कृति केंद्र में रही है। इस विषय में नागर जी अपनी रचना 'साहित्य और संस्कृति' में उस समय की परिस्थितियाँ और तहजीब का उल्लेख करते हुए लिखते हैं कि 'सन् 20-21 के जिस लखनऊ में मैंने होश संभाला था उसमें मुसलमान ही नहीं, बल्कि हिंदू समाज के हर वर्ण और जाति के लोग आपसी अभिवादन में नमस्ते-नमस्कार की बजाय सलाम कहते थे।..... आंखें दुखने पर पचीसों मुसलमान स्त्री-पुरुष आपको चौक की मशहूर बड़ी काली जी की नीर लेने के लिए मंदिर के बाहर भीड़ लगाए दिख जायेंगे। उनका विश्वास था कि काली जी के नीर से बच्चों की आंखें बिल्कुल ठीक हो जाती

हैं।'1 इस विश्वास को विश्वासघाती अंग्रेजी सरकार ने साम्प्रदायिक 'फूट' डाल कर कमजोर कर दिया। इसी का परिणाम है कि हमारा देश साम्प्रदायिक आग की लपटों में घिर गया। आजादी के इतने वर्षों बाद आज भी इन साम्प्रदायिक लपटों की आँच महसूस की जाती है। फिर नागर जी ने तो साम्प्रदायिकता की लपटों में अपना बहुत कुछ खोया था। इसलिए उनको जहां भी मौका मिला साम्प्रदायिकता को नाग का फन समझ कर कुचल दिया।

सांझी संस्कृति

उल्लेखनीय है कि अंग्रेजों ने भारत की सांस्कृतिक एकता में फूट डालकर हिन्दू और मुसलमान दोनों के दिलों में एक दूसरे के लिए नफरत पैदा कर दी। वह नफरत आज भी उनके दिलों से नहीं गई। यह नफरत और अलगाव साहित्य में भी देखने को मिलता है। 'दफ्तरों से लेकर कारखानों तक हिंदू-मुसलमान मिलकर काम करते हैं, पर हिंदी साहित्य में मुसलमान पात्र और उर्दू साहित्य में हिंदू पात्र कम मिलेंगे । जहां मिलते हैं, वहां भरपूर जानकारी और सहानुभूति से उनका चित्रण नहीं किया जाता। उनकी बातचीत में हिंदू-उर्दू का भेद, व्यवहार में हिंदू धर्म और इस्लाम का भेद दिखाई देता है। नागर जी के कथा साहित्य में किसी एक सामाजिक स्तर के हिंदू-मुसलमान एक ही ढंग से बातें करते हैं, धार्मिक कृत्यों को छोड़कर उनका व्यवहार एक-सा होता है। नागर जी हिन्दी के प्रबल पक्षपाती हैं अपने संवादों में हिंदी-उर्दू का भेद मिटा देते हैं।'2 जिसको हम 'पीढ़ियां' उपन्यास के पात्रों की बातचीत में देख सकते हैं - ''कमरे से बाहर आकर जीना उतरते हुए युधिष्ठिर ने जावेद से कहा, 'बन्ने साले तुझे कच्चा चबा जाउंगा।' अच्छा बेटा, चबा लेना नमक-मिर्च की पुड़िया मैं तुझे लाकर दे दूंगा।' साला, हिंदू-मुसलमान हिंदू-मुसलमान कह-कह के तूने बड़े भैया को उल्लू बना दिया। एण्ड यू आर नीदर हिंदू और मुसलमान। युधिष्ठिर के कंधे पर हाथ रखकर जावेद ने हँसते हुए कहा, - ''अबे जो तू है वो मैं हूं।'3 यह लखनऊ के हिंदू-मुसलमानों की भाषा है। ये हिंदू-मुसलमान पात्र एक प्रदेश के रहने वाले और एक जातीयता में भागीदार हैं। रामविलास शर्मा लिखते हैं कि-'देश के एकीकरण में नागर जी का योगदान यह है कि अपने कथा साहित्य में ढेर सारे मुसलमान पात्रों को जगह देकर; उन्हें हिंदी जातीयता में भागीदार दिखाकर, उन्होंने साम्प्रदायिक अलगाववाद पर जबर्दस्त प्रहार किया है और राजनीतिज्ञों का मार्गदर्शन किया है।'4

देश की सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय एकता का परिणाम है - भावनात्मक एकता। किसी देश की भावनात्मक एकता का संबंध उस देश की संस्कृति और उसके राष्ट्रीय गौरव बोध से जुड़ा होता है। अंग्रेजों ने भारतीयों की भावनात्मक एकता को कमजोर करके सांस्कृतिक अलगावाद के बीज बो दिए। देश के एक सजग सिपाही की भांति कथाकार अमृतलाल नागर ने पुनः भारतीयों को एकता के सूत्र में बांधने हेतु 'एकदा नैमिषारण्य' की रचना की। उन्होंने इसकी प्रेरणा नैमिष आंदोलन से ली थी। वे उपन्यास की भूमिका में लिखते हैं कि-' नैमिष आंदोलन को ही मैंने वर्तमान भारतीय या हिंदू संस्कृति का निर्माण करने वाला माना है। वेद, पुनर्जन्म, कर्मकाण्ड, उपासनावाद और ज्ञानमार्ग आदि का अंतिम रूप से समन्वय नैमिषारण्य में हुआ। अवतारवाद रूपी जादू की लकड़ी घुमाकर परस्पर

विरोधी संस्कृतियों को घुला-मिलाकर अनेकता में एकता स्थापित करने वाली संस्कृति का उदय नैमिषराण्य में हुआ और यह काम मुख्यतः राष्ट्रीय दृष्टि से किया गया।''5

भारतीयों में राष्ट्रीयता की भावना को जागृत करने हेतु उन्होंने भक्ति को आधार बनाया। इस प्रकार नागर जी की नैमिषराय भक्ति और राष्ट्रीयता का समन्वय है न कि हिंदू धर्म एवं पूजा-पद्धति की चर्चा का मध्यम है। डॉ. दामोदर वशिष्ठ एवं डा. बागड़ी लिखती हैं कि - ''वे शकों एवं आर्यों के एकीकरण में और इसी भांति शैवादि सम्प्रदायों को अविरोधी बनाकर समग्र भारत राष्ट्र की सुप्त चेतना को जाग्रत करना चाहते हैं। उनके लिए विभिन्न पूजा-पद्वतियाँ राष्ट्रीय हैं और इसी दृष्टि का सफलीभूत भगवती भक्ति के माध्यम से चाहते हैं।'6 जैसाकि 'राम की शक्तिपूजा' में निराला 'राम' के माध्यम से चाहते थे। कहना न होगा कि नागरजी ने भारतीय एकता को ऐतिहासिक-पौराणिक परिप्रेक्ष्य में सामयिक संदर्भों के माध्यम से देखने का महनीय प्रयत्न कियाहै। भारतीय संस्कृति अनेकानेक देशी-विदेशी संस्कृतियों का संगम है। भारत में ज्ञान तथा धन के लोभवश सहस्त्रों विदेशी जातियाँ आयीं और यहां के रंग-ढंग में ढल गयीं। उल्लेखनीय है कि इस महादेश में शक, कुशाण, यवन की तरह मुसलमानों का आगमन आक्रमणकारी के रूप अत्यधिक रहा और इसी कारण बहुल समाज में उनके प्रति प्रेम के स्थान पर घृणा उत्पन्न हुई। परंतु यह भी सत्य है कि अधिकांश मुसलमान शासक यहीं जन्मे और उनके हृदय में इस देश के प्रति भक्ति और निष्ठा जागृत हुई। उनकी इस निष्ठा को दृढ़ता प्रदान करने का कार्य कबीर, जायसी, रसखान, रसलीन, नजीर अकबरावादी और अकबर महान जैसे संतों एवं शासकों ने किया। इनके सद्प्रयासों से हिंदू-मुसलमान, जनता एक दूसरे के करीब आई और उनका आपस में सांस्कृतिक आदान-प्रदान हुआ। 'यहां एक साथ रहते हुए हिंदू-मुसलमानों ने एक दूसरे से बहुत कुछ लिया और दिया भी है बल्कि बहुत सी बातें हमने उनकी देखा-देखी अपनायी हैं और हिंदू भी दरगाह-पीर, अजमेर, शरीफ, देवा शरीफ वगैरह जगहों में इतना जाते हैं कि देख कर कोई यह नहीं कह सकता कि मजहब इंसान को बाँट सकता है।'7

मानव जाति के इतिहास में ऐसा कभी नहीं देखा गया कि दो विशाल, इतनी सुविकसित और साथ ही इतनी मौलिक रूप से दो सभ्यताओं का मिलन और सम्मिश्रण हुआ हो । यह, वह काल है जब भारतीय और मुस्लिम संस्कृतियाँ परस्पर मिलती हुई प्रतीत होेती हैं। इसी आधार पर डॉ.दामोदर वशिष्ठ एवं आशा बागड़ी ने लिखा है कि, ''हिंदू और मुसलमानों की सांस्कृतिक धरोहर एक है अर्थात् भाषा, परम्परागत चिंतन, वेशभूषा शताब्दियों से चली आई हुई है या युगानुरूप रूढ़ियाँ और मान्यताएँ रहन-सहन का ढंग आदि अनेक बातों में हिंदू और मुसलमानों में एक जैसी है। जन साधारण के रीति-रिवाज, रहन-सहन और वैचारिक उद्भावनाएँ समान हैं, समता है, पृथकता नहीं है, एकतत्व है, भिनत्व नहीं है।'8 इसी संदर्भ में नागर जी 'भारतीय साहित्य में प्रेमचंद का स्थान' नामक लेख में लिखते हैं कि पुर्तगाली, अंग्रेज और फिरंगियों के आने तक मुसलमान धर्म इस देश में एक नई स्थिति पा चुका था। सारे अलगाव के बावजूद अपने अस्तित्व को लेकर वे हिंदुस्तानी ही थे।

साफतौर पर साहित्य एवं इतिहास में उल्लेख मिलता है कि भारत में अंग्रेजों के आने से पूर्व मुसलमान भारतीय राष्ट्रीयता का हिस्सा थे। यही वजह है कि 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में हिंदू-मुसलमानों की एकता और लक्ष्यों की समानता ही अंग्रेज सरकार के लिए चिंता का मुख्य कारण थी और आगे चलकर उसने भरसक इस बात की कोशिश की कि यह ऐसे ही हीन बनी रहे। वे इसमें दूर तक सफल भी हुए। यह अलग बात है कि हमारे ही कुछ साहित्यकारों ने 1857 के स्वाधीनता संग्राम के इस पहलू को साम्प्रदायिकता की चादर में ढकने की कोशिश की। जिससे इसको लेकर एक भ्रम की स्थिति उत्पन्न हो गई। जानबूझ कर भ्रम फैलाया गया ताकि पुनः हिंदू-मुसलमान एक साथ मिलकर अंग्रेजों का विरोध न कर सकें। लेकिन अब इस विभ्रम से पर्दा उठ रहा है। स्वयं अमृतलाल नागर लिखते हैं कि जब वे अवध क्षेत्र में 1857 की जनक्रांति की स्मृतियाँ ढूंढ़ रहे थे तो उनको यह अनुभव हुआ कि ''यदि मेरे पास शक्ति और साधन होते और थोड़े से स्थानों पर पहुँच पाने की बजाय गदर के पूरे क्षेत्र का दौरा कर सकता तो मेरा विश्वास है कि हर जगह मुझे ऐसे ही स्फूर्ति मिलती। स्वाभिमान और स्वतंत्रता के लिए होने वाले युद्ध में हिंदू-मुसलमान दोनों ही अपने अंदर से अनेक उदात्त वीर नायक-नायिकाओं को राष्ट्रीयता के उगते हुए नए रूप और स्वतंत्रता की रक्षा के लिए राष्ट्र को प्रदान कर रहे थे।''9 उनमें एक नाम अवध क्षेत्र की वीर बाकुरी बेगम हजरत महल का भी है। जिनके नेतृत्व में अनेक हिंदू सरदार - चहलारी के ठाकुर बीभद्र सिंह, रायबरेली के राणा वेणी माधव बख्श, गोण्डा के राजा देवी बख्श आदि ने अंग्रेजों से संघर्ष किया। इतिहास में सांस्कृतिक-राष्ट्रीयता का इससे बड़ा उदाहरण क्या हो सकता है।

1857 के स्वाधीनता संग्राम में एक ओर अगर राजा और सामंत अंग्रेजों से संघर्ष कर रहे थे, तो दूसरी ओर आम जनता की भी भागीदारी थी। अमृतलाल नागर 'गदर के फूल' में फैजाबाद जिले की चर्चा के प्रसंग में, 1857 में भाग लेने वाले बाबा रामचरण दास और अमीर अली के योगदान को रेखांकित करते हैं। यह ऐतिहासिक घटना भारतीय सांस्कृतिक एकता को पुष्ट करती है। 'बाबा रामचरणदास और अमीर अली ने अयोध्या की श्रीराम जन्मभूमि जिसे मुसलमान बाबरी मस्जिद कहते हैं, हिंदुओं को वापस दिलाने के लिए मुसलमानों को राजी कर लिया था, जिसके फलस्वरूप अंग्रेजों में बुरी तरह घबराहट फैल गई।-----।भाईयों, बहादुर हिंदू हमारी सल्तनत को हिंद में मजबूत करने के लिए लड़ रहे हैं, इनके दिल पर काबू पाने और इनके अहसानों का बोझ अपने सिर से उतार देने के लिए हमारा फर्ज है कि अयोध्या की श्रीराम जन्मभूमि जिसे मुसलमान बाबरी मस्जिद कहते हैं। जो हकीकत में रामचंद्रजी की जन्मभूमि मंदिर को जमींदोज करके शांहशाहे हिंद बाबर ने बनवाई थी, हिंदुओं को वापिस दे दें। इससे हिंदू-मुस्लिम इतहाज की जड़ इतनी मजबूत हो जायेगी कि जिसे अंग्रेज के बाप भी उखाड़ नहीं सकेंगे।''10

हालांकि अंग्रेजों की कूटनीति के कारण यह सद्प्रयास असफल हो गया। लेकिन अमीर अली के इस सद्कार्य से यह जरूर विदित होता है कि अंग्रेजों के आगमन से पहले ही मुसलमान भारतीय संस्कृति का अभिन्न हिस्सा बन कर भारतीय जातीयता में बराबर के भागीदार थे। तभी अंग्रेज उन्हें विदेशी प्रतीत हुए इसीलिए

उन्होंने हिंदुओं के साथ मिलकर 1857 की जनक्रांति में भाग लिया।

अमृतलाल नागर अपने उपन्यास 'पीढ़ियाँ' में इस बात की चर्चा करते हैं कि अंग्रेजी सरकार 1857 में हिंदू-मुसलमान जनता की भागीदारी से भयभीत हो गई। अंग्रेजों को यह प्रतीत हो गया कि भारत में स्थायी शासन को सुचारु रूप से संचालित करने के लिए हिंदू-मुस्लिम एकता को कमजोर करना आवश्यक है। अपने इन्हीं उद्देश्यों की पूर्ति हेतु उन्होंने 1905 में बंगाल का विभाजन कर दिया। उस समय बंगाल राष्ट्रीय चेतना का केंद्र था। लेकिन अंग्रेजों की बंगाल विभाजन की चाल उन्हीं के विरुद्ध हथियार बन गई। इस विभाजन से उपजे बहिष्कार और स्वदेशी आंदोलन ने सांझी संस्कृति को और दृढ़ता प्रदान की। इस संदर्भ में इतिहासकार अयोध्या सिंह लिखते हैं कि- ''युद्धोत्तर काल के जनआंदोलन की एक बड़ी विशेषता थी, विभिन्न धर्मावलंबियों के बीच खासकर हिंदुओं और मुसलमानों के बीच फौलादी एकता। वतन की मुहब्बत कट्टरता से कहीं ज्यादा ताकतवर साबित हुई। सारा हिंदुस्तान एक कौम की तरह ब्रिटिश साम्राजियों के खिलाफ खड़ा हो गया। इस एकता को तोड़ने और धर्म के नाम पर हिंदुओं-मुसलमानों को आपस में लड़ाने की कोशिश ब्रिटिश शासकों ने कई बार और कितने स्थानों पर की थी, लेकिन असफलता ही हाथ लगी।''11

स्पष्टतः 1857 के स्वाधीनता संग्राम और 1905 के बंगाल विभाजन की प्रतिक्रिया स्वरूप हिंदू-मुसलमान जनता का अंग्रेजी सरकार के विरोध करने से यह बात साफ तौर पर जाहिर होती है कि भारत में आने वाला प्रत्येक विदेशी आक्रमणकारी प्रारंभ में भले ही शत्रु रहा हो लेकिन कालांतर में वह भारतीय संस्कृति का हिस्सा बनकर भारतीय ही कहलाए। मुसलमान इसका उदाहरण है। अंग्रेजों के आने से पूर्व वह भारत को अपना राष्ट्र माने लगे थे, तभी उन्होंने हिंदुओं के साथ मिलकर अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध संघर्ष किया। हम पूरे राष्ट्रीय आंदोलन में इस हिंदू-मुस्लिम एकता की मिसाल को देखते हैं। जब-जब राष्ट्रीय आंदोलन उभार पर हुआ अंग्रेजों ने इसका क्रूरतापूर्वक दमन किया। हिंदू मुसलमानों ने मिल कर ब्रिटिश सरकार की दमनकारी नीतियों के खिलाफ प्रतिरोध किया। अमृतलाल नागर 'पीढ़ियां' उपन्यास में इस दमनकारी नीति के विरुद्ध हिंदू-मुस्लिम जनता उल्लेख करते हैं - ''दिल्ली में सत्याग्रहियों का जुलूस निकला, जिसका नेतृत्व स्वामी श्रद्धानंद कर रहे थे। उन्हें गोरे सिपाहियों ने गोली मारने की धमकी दी। इस पर उन्होंने अपनी छाती खोल दी और कहा 'लो मार लो गोली।' ...लेकिन दिल्ली के रेलवे स्टेशन पर गोली चल गई जिसमें कुछ मरे अनेक घायल हुए। ...जो लोग हताहत हुए, उनमें हिंदू भी थे और मुसलमान भी। जब हिंदू शहीद की अर्थी निकली तो उसे हकीम अजमल खां साहब ने कन्धा दिया और जब मुसलमान शहीद का जनाजा निकला तो उसके साथ स्वामी श्रद्धानंद के नेतृत्व में हिंदुओं की भीड़ कब्रिस्तान तक गई। हिंदू-मुसलमान मिलकर घी शक्कर हो गए। 'हम' शब्द की नई व्याख्या की जाने लगी है 'ह' हिन्दू और 'म' मुसलमान'।''12 अंत में पूरे राष्ट्रीय आंदोलन में यही दृश्य देखने को मिला ।

निष्कर्ष

अमृतलाल नागर अपने साहित्य में इस बात को रेखांकित करते हैं कि पूरे राष्ट्रीय आंदोलन में हिंदू-मुस्लिम जनता की भागीदारी यह सिद्ध

करती है कि हिंदू-मुसलमान हिन्दुस्तानी राष्ट्रीयता में साझीदार थे। यही वजह है कि राष्ट्रीय आंदोलन में हिंदू-मुसलमानों ने कंधे से कंधा मिलाकर अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध संघर्ष किया। इन सबके बावजूद अंग्रेजों ने 'हिंदू-मुसलमानों के बीच जो फूट और नफरत के बीज बो दिये थे। उसकी फसल साम्प्रदायिकता के रूप में सामने आयी। जिसका घिनौना चेहरा प्रत्येक भारतीय ने देखा। जो हिंदू-मुसलमान भारतीय सांस्कृतिक एकता के प्रतिमान थे, उन्हीं के बीच सांझी संस्कृति का सवाल खड़ा हो गया। और हिंदू मुस्लिम एकता को सांझी संस्कृति के रूप में देखा जाने लगा जबकि पूर्व में वे दोनों भारतीय संस्कृति का अभिन्न हिस्सा थे। लेकिन भारत-पाकिस्तान की तरह वे दो संस्कृतियाँ हो गईं। इस अलगाव के पीछे साम्प्रदायिकता का बड़ा हाथ है। ''इनके उदाहरण से यह साफ हो जाता है कि सम्प्रदायिकता एक ढलान का रास्ता है और अवरोध के विशेष प्रयत्न न किए जाएँ तो आदमी उस पर फिसलता जाता है और स्थिति तब भयानक हो जाती है जब ब्रिटिश साम्राज्य जैसा षड्यंत्रकारी उसको धक्का दे दे तो उसका परिणाम एक ही होता है - जो भारत का हुआ।''13

सन्दर्भ ग्रंथ:

1.अमृतलाल नागर: साहित्य और संस्कृति, पृ. 208
2.रामविलास शर्मा: अमृतलाल नागर ग्रंथावली,;भाग एकद्ध,पृ.2
3.अमृतलाल नागर: पीढियां, पृ. 60
4. रामविलास शर्मा: अमृतलाल नागर ग्रंथावली,;भाग एकद्ध,पृ.3
5. अमृतलाल नागर: एकदा नैमिषराण्य, पृ. 324
6.डॉ.दामोदर वसिष्ठ एवं डाॅ.आशा बागड़ी:उपन्यासकार:अमृतलाल नागर ,पृ.142
7.वही,पृ.145
8. वही,पृ.146
9. अमृतलाल नागर: गदर के फूल,पृ.220
10. अमृतलाल नागर: गदर के फूल,पृ.72
11.अयोध्या सिंह: भारत का मुक्ति का सग्राम, पृ. 413
12..अमृतलाल नागर: पीढियां, पृ. 277
13.विपिन चन्द्र: भारत का स्वतंत्रता संघर्ष, पृ. 346